भारतीय ज्ञान धरोहर
विमर्श और परंपरा

सम्पादक

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय ज्ञान धरोहर

विमर्श और परम्परा

सम्पादक

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

छवि पब्लिकेशन्स

अजमेर-305001

प्रकाशक :
छवि पब्लिकेशन्स
अजमेर-305001
मो. 9660111549

संस्करण :
प्रथम 2023

ISBN : **978 - 81 - 89435 - 69 - 1**

मूल्य - 400/-

रचना - भारतीय ज्ञान धरोहर : विमर्श और परम्परा

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

मुद्रक - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

11

भारत में ज्ञान परम्परा में वेदांग

रत्ना गौड़

सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)

हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

भारतीय ज्ञान-परंपरा में वेदों को संसार का प्राचीनतम ज्ञान-कोश माना गया है। वेदों की उत्पत्ति अनादि मानी जाती है और उन्हें अपौरुषेय कहा गया है, अर्थात् उनका रचयिता कोई मानव नहीं, बल्कि ब्रह्म की शाश्वत ध्वनि ही वेदों में प्रकट होती है। वेदों की यह दिव्य ध्वनि श्रुति के रूप में प्रकट हुई और ऋषियों द्वारा अनुभव की गई। किंतु वह अनुभव सामान्य मनुष्यों के लिए बोधगम्य बने, इसके लिए एक व्यवस्थित, समझने योग्य और शास्त्रीय ढांचे की आवश्यकता थी। यही आवश्यकता वेदाङ्गों की रचना का मूल कारण बनी।

वेद अत्यंत प्राचीन भाषा में हैं, जिसे हम 'वैदिक संस्कृत' कहते हैं। यह भाषा संरचना, व्याकरण, ध्वनि, अर्थ और वाक्य-शैली में आज की शास्त्रीय संस्कृत से भी पहले की अवस्था का प्रतिनिधित्व करती है। इसके अतिरिक्त वेदों की रचना छन्दों में हुई है, और उनका सही प्रभाव तभी प्रकट होता है जब उनका उच्चारण, स्वर, मात्रा और विन्यास पूर्णतः शुद्ध हो। इसलिए वेदों के अध्ययन, अनुष्ठान, प्रयोग, व्याख्या और संरक्षण के लिए विशेष सहायक शास्त्रों की रचना आवश्यक हुई। यही छह शास्त्र वेदाङ्ग कहलाए।

वेदांगों का उदय वेदों के बहुत बाद का नहीं है; वे वेदों के साथ-साथ हजारों वर्षों की मौखिक परंपरा में विकसित हुए। ऋषियों ने अनुभव किया कि वेदों की व्याख्या यदि गलत हुई, यदि उच्चारण में त्रुटि आई, यदि अनुष्ठानों की विधि बिगड़ गई, यदि काल-निर्धारण अशुद्ध हुआ, तो वेद का वास्तविक ज्ञान नष्ट हो सकता है। इसलिए वेदांग वेदों के अर्थ, पाठ, प्रयोग और संरक्षण की गारंटी हैं।

वेदांगों के नाम—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष सिर्फ शीर्षक नहीं हैं; प्रत्येक के पीछे एक विस्तृत सांस्कृतिक विज्ञान विकसित हुआ है। वेदों का अध्ययन केवल धर्मशास्त्र नहीं था; वह भारतीय सभ्यता का संपूर्ण ज्ञान-विन्यास था। वेदांगों ने इस विन्यास को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।

शिक्षा वेदांग

शिक्षा वेदों का ध्वनि-विज्ञान है। भारतीय मौखिक परंपरा इतनी सुदृढ़ क्यों रही कि हजारों वर्षों के बाद भी वेदमंत्रों का एक अक्षर भी परिवर्तित नहीं हुआ? इसका उत्तर शिक्षा में निहित है। शिक्षा वेदांग ने ध्वनि, स्वरों, वर्णों और उच्चारण के इतने सूक्ष्म नियम दिए कि वेदों की मौखिक ध्वनि-जड़ित परंपरा वैज्ञानिक रूप से संरक्षित हो गई।

वेदों में मंत्रों की शक्ति ध्वनि से उत्पन्न होती है। 'नाद ब्रह्म' की परंपरा यही कहती है कि ब्रह्म की प्रथम अभिव्यक्ति ध्वनि के रूप में होती है। इसीलिए शिक्षा ने ध्वनि का अध्ययन केवल व्याकरणीय स्तर पर नहीं, बल्कि दार्शनिक और ऊर्जात्मक स्तर पर भी किया।

वर्णों को उत्पन्न करने के स्थान—कंठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ—का जो वर्गीकरण शिक्षा देती है, वह आधुनिक भाषाविज्ञान में आज भी पूर्णतया वैज्ञानिक माना जाता है। वैदिक मंत्रों में स्वर—उदात्त, अनुदात्त और स्वरित—मंत्रों का अर्थ बदलते हैं। इसलिए शिक्षा वेदांग यह सुनिश्चित करता है कि उच्चारण बिल्कुल वैसा ही रहे जैसा ऋषियों ने सुना और बोला था।

शिक्षा मंत्र-पाठ के चार रूपों—पदपाठ, संहिता-पाठ, क्रम-पाठ तथा घटना-पाठ का वैज्ञानिक निर्देश देती है। इन विधियों से वेदमंत्रों में किसी भी प्रकार की पाठत्रुटि असंभव हो जाती है। यदि एक छात्र ने एक पाठ में गलती की, तो क्रम-पाठ या घटना-पाठ में वह त्रुटि तुरंत पकड़ ली जाती थी। यह एक अद्वितीय मौखिक सुरक्षा-प्रणाली थी, जो दुनिया में कहीं और नहीं मिलती।

कल्प वेदांग

कल्प वेदांग वैदिक संस्कृति की रीढ़ कहा जा सकता है, क्योंकि यह केवल अनुष्ठान-विधि नहीं सिखाता, बल्कि भारतीय जीवन के सभी संस्कारों का आधार प्रस्तुत करता है। जन्म से मृत्यु तक मनुष्य के जीवन के सभी चरणों—गर्भाधान, जन्मोत्सव, नामकरण, उपनयन, विवाह, श्राद्ध—सबकी वैदिक विधियाँ कल्पसूत्रों में विवेचित हैं।

वेदों के मंत्र तभी अपने प्रभाव को उत्पन्न करते हैं जब उन्हें सही विधि, सही समय और सही अनुष्ठान में प्रयुक्त किया जाए। यही विधि कल्प वेदांग देता है।

कल्पसूत्रों के तीन मुख्य वर्ग—श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र अपने-अपने क्षेत्र में अत्यंत व्यापक हैं। श्रौतसूत्र बड़े यज्ञों की विधियाँ बताते हैं, जिनमें अग्निहोत्र, दार्शपौर्णमास, सोमयाग आदि आते हैं। इस प्रकार श्रौतसूत्र वेदों की अनुप्रयोग-परंपरा

का मूल आधार है।

गृह्यसूत्र गृहस्थ जीवन के नियम हैं। उनमें 'परिवार' नामक संस्था को वैज्ञानिक रूप से व्यवस्थित किया गया है। विवाह-विधि, उपनयन, गृह-प्रवेश, अन्नप्राशन, श्राद्ध आदि संस्कारों की विधि गृह्यसूत्रों में विस्तृत है। यह भारतीय समाज के सुव्यवस्थित और संस्कृति-समाधारित स्वरूप को दर्शाता है।

धर्मसूत्रों में समाज के आचार-विचार, दायित्व और नैतिकता के नियम वर्णित हैं। समाज में कौन-सी आचार-संहिता का पालन हो, किस परिस्थिति में कौन-सा व्यवहार उचित है, राज्य और व्यक्ति के कर्तव्य क्या हैं—ये सब धर्मसूत्रों में निहित है। यही आगे चलकर मनुस्मृति और अन्य स्मृतियों का आधार बना।

कल्प वेदांग का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण उपांग है—शुल्बसूत्र। इसमें यज्ञ-वेदी निर्माण की ज्यामिति वर्णित है। आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि पायथागोरस प्रमेय, ज्योमितीय निर्माण, मापन, क्षेत्रफल और अनुपातों का ज्ञान शुल्बसूत्रों में पहले से विद्यमान था। यह भारतीय गणित की प्राचीन उपलब्धि है, जिसे विश्व अब मान्यता दे रहा है।

व्याकरण वेदांग

व्याकरण वेदांग केवल भाषा का शास्त्र नहीं है; यह भारतीय ज्ञान-विन्यास की बौद्धिक रीढ़ है। भारत की समस्त दार्शनिक परंपरा में व्याकरण का प्रभाव इतना प्रबल रहा है कि भाषा के माध्यम से ही सत्य की खोज का मार्ग प्रशस्त हुआ। यह आश्चर्यजनक है कि भारत में भाषा को केवल संचार का माध्यम नहीं माना गया, बल्कि उसे ब्रह्म की अभिव्यक्ति समझा गया।

पाणिनी की अष्टाध्यायी विश्व का सर्वाधिक वैज्ञानिक व्याकरण है। इसमें भाषायी नियमों को सूत्रों में बांधा गया है, जिनमें संक्षिप्तता, तार्किकता और संगति का ऐसा उदाहरण मिलता है जो आधुनिक कंप्यूटर-भाषाओं से भी अधिक प्रभावी माना जाता है। पाणिनी का व्याकरण केवल संस्कृत के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भाषाशास्त्र के लिए एक आधारभूत मॉडल है।

व्याकरण वेदों की भाषा को शुद्ध करता है। वैदिक शब्दों के रूप, संधि, धातु, प्रत्यय, वाक्यरचना—इन सबकी समझ व्याकरण के बिना संभव नहीं। वेदों के अनेक मंत्र बहुअर्थी हैं। किसी एक शब्द का अर्थ संदर्भानुसार भिन्न हो सकता है; यह भिन्नता व्याकरण ही स्पष्ट करती है।

भारतीय साहित्य—काव्य, नाटक, अलंकार, तर्कशास्त्र, वेदान्त—सभी व्याकरण के ढांचे पर आधारित हैं। यहां तक कि मीमांसा और वेदान्त जैसे दर्शन भी भाषिक

अर्थों की व्याख्या पर टिका है।

इसीलिए व्याकरण वेदों का अर्थ-रक्षक और संरक्षक दोनों है।

निरुक्त वेदांग

वेदों की भाषा अत्यंत प्राचीन, काव्यमयी और रहस्यमय है। ऋषियों की वाणी केवल घटनाओं का वर्णन नहीं करती, बल्कि एक प्रतीक और अनुभूति के माध्यम से गहरे आध्यात्मिक सन्देशों को संप्रेषित करती है। ऐसी गूढ़ भाषा को समझने के लिए एक विशेष पद्धति आवश्यक थी—यह पद्धति निरुक्त के रूप में विकसित हुई। निरुक्त केवल शब्दकोश नहीं है, न ही यह केवल व्याख्या मात्र है। यह वास्तव में शब्दों की आत्मा खोजने का विज्ञान है। आचार्य यास्क का निरुक्त इसी गूढ़ संसार की कुंजी बनकर उभरता है।

निरुक्त का मूल उद्देश्य किसी शब्द के पीछे काम कर रहे आदिकालीन संस्कार, धातु का मूल अर्थ, उपसर्ग-प्रभाव, सांस्कृतिक संदर्भ, वैदिक ऋषियों का उद्देश्य, और व्यंजनार्थ को उजागर करना है। उदाहरण के लिए जब ऋषि 'अग्नि' कहते हैं, तो वे केवल भौतिक आग की बात नहीं कर रहे। उनके लिए अग्नि प्रकाश का प्रतीक है, तेज का है, ज्ञान का है, नेतृत्व का है, यज्ञ का आधार है, गति का स्रोत है। निरुक्त इस बहुस्तरीय अर्थ को खोलता है।

यास्क ने यह भी कहा कि समय के साथ शब्द बदलते हैं, अर्थ बदलते हैं, परंतु वेद में प्रयुक्त शब्द समयातीत हैं। उन्हें साधारण व्याकरण से नहीं समझा जा सकता, इसलिए निरुक्त की आवश्यकता बनी।

निरुक्त में शब्दों के तीन समूह वर्णित मिलते हैं—नैगम, नैगद और दैव। नैगम वे शब्द हैं जो सामान्य लोक-व्यवहार में प्रचलित नहीं हैं। नैगद वे जो विशेष अर्थों में प्रयुक्त होते हैं, और दैव वे जो देवताओं, ब्रह्मांडीय शक्तियों, ऋतुओं, दिशाओं और प्राकृतिक तत्वों के लिए प्रयुक्त होते हैं।

निरुक्त का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि यह केवल भाषाशास्त्र नहीं, बल्कि ज्ञानमीमांसा भी है। यह बताता है कि एक शब्द का अर्थ केवल धातु से नहीं निकलता, बल्कि उसके प्रयोग, संदर्भ, युग, संस्कृति और अनुभूति से भी परिभाषित होता है। इस दृष्टि से निरुक्त आधुनिक भाषाशास्त्र का भी पूर्वज है। भारतीय परंपरा में इसे 'वेदों का प्रकाश' कहा गया है, क्योंकि वेद-वाणी का गहनतम स्वरूप इसी के द्वारा प्राप्त होता है।

छन्द वेदांग

यदि वेद वाणी का शरीर है तो छन्द उसकी गति है, उसका प्राण है। वेदों का

मूल स्वरूप मौखिक था। पीढ़ियों तक न लेखन था, न मुद्रण। केवल स्मृति और श्रुति ही माध्यम थे। ऐसी स्थिति में किसी भी शब्द का स्वर थोड़ा भी बदल जाए तो पूरा मंत्र का अर्थ बदल जाता। इसलिए छन्द, न केवल साहित्यिक अनुशासन था, बल्कि यह स्मृति की रक्षा का शास्त्र भी था।

छन्द वेदांग मंत्रों के उच्चारण, गति, लय, ताल और स्वर-संयोजन का सूक्ष्मतम विज्ञान है। ऋग्वेद के मंत्रों का गायन, यजुर्वेदीय मंत्रों का पाठ और सामवेद के इन सब में छन्द का अपना विशिष्ट महत्व है। वेदों का प्रत्येक मंत्र किसी न किसी छन्द में बंधा हुआ है। यह छन्द मंत्र की आंतरिक ऊर्जा का नियामक होता है।

वेदों में कई छन्द प्रयोग किए गए हैं—गायत्री, अनुष्टुप्, त्रिष्टुप्, जगती, बृहती आदि। प्रत्येक छन्द का अपना संगीत है, अपना वक्षस्थल है, अपनी लहर है। गायत्री में 24 वर्णों की दिव्य गति है। अनुष्टुप् में 32 वर्णों की सहज लय है। त्रिष्टुप् में 44 वर्णों का गंभीर स्वर है। यह केवल गणित नहीं, बल्कि श्रुति-संस्करण की एक अद्भुत पद्धति है जिसमें ध्वनि, भावना और अर्थ एक ही धारा में बहते हैं।

छन्दशास्त्र के महान आचार्य पिंगल ने इस पूरे विज्ञान को नियम, सूत्र और गणों में बाँधा। गुरु-लघु के आधार पर छन्दों की विविधता निर्मित होती है। गणों का संयोजन संगीत और गणित के अद्भुत सामंजस्य को दर्शाता है। छन्दों के कारण ही वेदों की वाणी हजारों वर्षों तक एक-रूप, एक-स्वर बनी रही। यही कारण है कि आज भी जब सामवेद का कोई स्तोत्र गाया जाता है, तो उसकी दिव्य अनुगूँज उसी प्रकार लहराती है जैसी सहस्रों वर्ष पहले लहराती रही होगी।

छन्द का एक और गहरा पक्ष यह है कि यह केवल ध्वनि की संरचना नहीं, बल्कि आत्मा की गति भी है। जब कोई मंत्र अपने छन्द में गाया जाता है, तो वह केवल शब्द नहीं, बल्कि भावनाओं, संवेदनाओं और चेतना के स्तरों को जगाता है। इसीलिए छन्द को ऋषियों ने 'वाणी का हृदय' कहा है।

ज्योतिष वेदांग

वेदांग ज्योतिष भारतीय ज्ञान परंपरा की वह धारा है जिसने मानव को समय की गहराई समझाई। सूक्ष्मता से देखने पर पता चलता है कि भारतीय ऋषियों ने समय को मात्र घंटों, दिनों या ऋतुओं के रूप में नहीं देखा, बल्कि ब्रह्मांडीय शक्ति के रूप में देखा। काल ही सृष्टि की गति है, और काल का ज्ञान जीवन का आधार है।

वेदांग ज्योतिष का उद्देश्य भविष्यवाणी करना नहीं था। वह तो बाद में विकसित शाखाओं का विस्तार है। वेदांग ज्योतिष का वास्तविक प्रयोजन था—यज्ञों, अनुष्ठानों,

संस्कारों और सामाजिक गतिविधियों का समय-निर्धारण। प्राचीन काल में प्रत्येक कार्य का अपना मुहूर्त, अपना नक्षत्र और अपनी ग्रहस्थिति होती थी। यदि समय अनुचित हो तो कार्य का फल बाधित होता। इसलिए ऋषियों ने सूर्य और चंद्र की गति को, ऋतुओं के चक्र को, अयनांत और विषुव को, नक्षत्रों की स्थिति को अत्यंत सूक्ष्मता से अध्ययन किया।

ज्योतिष वेदांग के दो मुख्य रूप—ऋग्वेदीय और यजुर्वेदीय समय की गणना, वर्ष की रचना, नक्षत्रों की स्थिति और ग्रहों की गति का स्पष्ट वर्णन करते हैं। यह वर्णन आज भी असंख्य आधुनिक वैज्ञानिक सिद्धांतों से साम्यता रखता है, यह बात भारत की खगोल-परंपरा की प्राचीनता और समृद्धि को स्पष्ट करती है।

ज्योतिष में समय को कई स्तरों पर समझाया गया है—

'क्षण' से लेकर 'मुहूर्त', मुहूर्त से 'दिन', दिन से 'पक्ष', पक्ष से 'मास', मास से 'ऋतु', ऋतु से 'अयन', और अयन से 'संवत्सर'। यह समय-ब्रह्माण्ड उसी प्रकार गतिशील है जैसे मानव का जीवन स्वयं गतिशील है।

ज्योतिष के बिना वेदों का संपूर्ण कर्मकांड अपूर्ण है। प्रत्येक यज्ञ की दिशा, स्थान, अग्नि, आहुति, और समय का संबंध आकाशीय गणना से निर्धारित होता है। इसीलिए वेदांग ज्योतिष को भारतीय सभ्यता का 'समय-विधान' कहा गया है। यह केवल गणना नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय अनुशासन का अनुभव है—एक ऐसा अनुशासन जो ऋतुओं का संगीत बनकर प्रकृति को व्यवस्थित रखता है।

ज्योतिष का आगे चलकर आर्यभट्ट, वराहमिहीर, भास्कराचार्य जैसे महान खगोलविदों ने विस्तृत रूप में विकास किया। परंतु उनकी जड़ों में वही वेदांग ज्योतिष की मूल धारा है, जिसने भारतीय वैज्ञानिक चिंतन की दिशा निर्धारित की।

सारत: वेद भारतीय ज्ञान-परम्परा का मूलग्रंथ है और वेदांग उस मूल को समझने, संरक्षित रखने तथा अनुप्रयोग योग्य बनाने वाले अनिवार्य सहायक अंग हैं। शास्त्रों में इनकी तुलना वेद के शरीर से की गई है—जैसे शरीर बिना अंगों के अपूर्ण होता है, वैसे ही वेद अध्ययन भी वेदांगों के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। शिखा, सन्धि, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष—ये छहों मिलकर वेद के अर्थ, भाषा, उच्चारण, व्याख्या, तर्क, अनुष्ठान और समय-निर्धारण को विधिवत स्थापित करते हैं।

उच्चारण में शुद्धता शिखा का कार्य है; संधि के नियम शब्द-सम्प्रेषण को स्पष्ट करते हैं; व्याकरण भाषा के ढाँचे को शुद्ध करता है; निरुक्त शब्दों के मूल-भाव तक पहुँचने की विद्या है; छन्द वेद की काव्य-गति, लय और मंत्र-सौन्दर्य को सुरक्षित रखता है; तथा ज्योतिष ऋतु, समय और अनुष्ठान की वैश्विक गणना द्वारा

वैदिक कर्म को यथार्थ रूप देता है।

इस प्रकार वेदांगों का एकत्रित उद्देश्य केवल वेद-पाठ की तकनीकी शुद्धि नहीं, बल्कि वैदिक ज्ञान को समग्र, वैज्ञानिक, व्यवस्थित और सनातन रूप से सुरक्षित करना है। यहीं से स्पष्ट होता है कि भारतीय परम्परा में भाषा-विज्ञान, व्याकरण, गणित, खगोल, काव्य-विज्ञान, शब्द-व्युत्पत्ति और तर्क—इन सभी का उद्‌भव और विकास वेद व वेदांगों के माध्यम से हुआ। वेदांग इसलिए केवल धार्मिक उपकरण नहीं, बल्कि एक विशाल बौद्धिक परम्परा के आधार-स्तम्भ हैं, जिन्होंने भारतीय ज्ञान, साहित्य, कला, विज्ञान और संस्कृति को एक अनवरत धारा में जोड़े रखा।

✤✤✤